IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कला समेकित शिक्षा के प्रयोग का जनपद पीलीभीत के परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों के अनुभव व उम्र के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।

नीलेश नाथ, महेन्द्र कुमार सिंह
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बीसलपुर, पीलीभीत

सारांश

कला समेकित शिक्षा की परिकल्पना ऐसे शिक्षणशास्त्र के रूप में की गई है, जो विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों पर लागू होता है। जिसका उद्देश्य विद्यार्थी के संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक और मनोगत्यात्मक ज्ञान क्षेत्रों (साइकोमोटर डोमेन) का समग्र विकास करना है। कला समेकित शिक्षा को प्रदान करने का शिक्षक का सबसे बड़ा महत्वपूर्ण योगदान है, शिक्षण शिक्षक की कुशलतापूर्वक ज्ञान प्रदान करने की क्षमता है। एक प्रभावी शिक्षक जिसके पास ज्ञान और कौशल हो और जो नए–नए प्रयोग कर सके।

कहते हैं कि अनुभव और उम्र का शिक्षण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यही जानने के लिए कि क्या सच में उम्र का प्रभाव शिक्षण पद्धति पर पड़ता है, इसलिए वर्तमान शोध में दो समूह को शामिल किया गया जो कि है (21–40 वय वर्ग के शिक्षक और 50–60 वय वर्ग के शिक्षक)। नमूना 100 लोगों का लिया गया, जिसमें 50 (21–40 वय वर्ग के शिक्षक) और 50 (50–60 वय वर्ग के शिक्षक) थे, शिक्षकों को प्रश्नावली दी गई जिनके स्कोर से टी–परीक्षण को लगाया गया, परिणाम से पता चलता है कि परिकल्पना को स्वीकार कर लिया गया है, परिकल्पना थी कि 21–40 वय वर्ग के शिक्षक और 50–60 वय वर्ग के शिक्षक की शिक्षण पद्धति में अतंर होगा और यहां भी देखा गया कि 21–40 वय वर्ग के शिक्षक कला समेकित शिक्षा का अनुकूलित तरीके से प्रयोग कर पा रहे हैं, जिससे दूसरी परिकल्पना भी सिद्ध हो गई।

प्रस्तावना

कला समेकित शिक्षा एक शिक्षण मॉड्यूल है, जो कला के माध्यम से सीखने पर आधारित है। यह मॉड्यूल शिक्षार्थियों को अपने शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में कला को समेकित करने में, सीखने में, और अभ्यास करने में सक्षम बनाता है। कला समेकित अधिगम (Art Integrated Learning) अनभुवात्मक अधिगम की एक ऐसी रूपरेखा है जो सभी विद्यार्थियों को अपनी गति के अनुसार सीखने का एक समान वातावरण प्रदान करती है। कला समेकित वातावरण से विद्यार्थी कला–गतिविधियों में संलग्न रहते हैं और इस माध्यम से नए अर्थ, नयी समझ का सृजन करते हैं। कला समेकित अधिगम की परिकल्पना ऐसे शिक्षणशास्त्र के रूप में की गई है, जो विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों पर लागू होता है। जिसका उद्देश्य विद्यार्थी के संज्ञानात्मक, सामाजिक–भावनात्मक और मनोगत्यात्मक ज्ञान क्षेत्रों (साइकोमोटर डोमेन) का समग्र विकास करना है। कला समेकित अधिगम ने विषयों के आपसी जुड़ाव और सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को कई स्तरों पर समग्रता प्रदान की है। यह अन्तः विषय एवं योग्यता–आधारित अधिगम को उचित स्थान प्रदान करता है। इस रूपरेखा को जारी करने से पहले, इसका देश भर के विभिन्न स्कूलों में यह जानने के लिए परीक्षण किया गया कि यह सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को सार्थक और आनंदपूर्ण बनाने में कितना व्यावहारिक और प्रभावी है।

भारत में, नोबल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर ने कला और अधिगम के बीच सबंध के विचार की नींव रखी। उनके कई विचारों को, उनके विद्यार्थी देवी प्रसाद द्वारा **कला–शिक्षा का आधार (1998)** नामक पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है। कार्यक्षेत्रों में किए गए व्यापक अनुसंधानों ने सिद्ध किया है कि सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं के दृश्य और प्रदर्शन कलाओं का उपयोग सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करता है, समस्याओं को सुलझाने की क्षमता विकसित करता है और मानसिक कल्पना चित्रों के प्रयोग की योग्यता में सुधार करता है। ललित कला की शिक्षा का महत्व एक अवलोकन में पाया कि ललित कलाओं का अध्ययन और उनमें हिस्सा लेना विद्यार्थी के व्यवहार और दृष्टिकोण, दोनों को प्रभावित करता है। **खान और अली (2016)**

सियोल एजेंडा (2010) की प्रस्तावना इस बात पर बल देती है कि" आज के संसार में जहाँ एक ओर प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हो रही है, वहीं दूसरी ओर असाध्य सामाजिक और सांस्कृतिक अन्याय भी हो रहा है। तेजी से बदलती इस दुनिया में विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिक्षा–व्यवस्था संघर्ष कर रही है। इस शिक्षा–व्यवस्था के रचनात्मक परिवर्तन में कला–शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है।''

हमारे विद्यालय में 'कला समेकित अधिगम' का प्रयोग होते हुए आठ साल हो गए हैं। 'कला समेकित अधिगम' से पहले, अधिगम और उपलब्धियों की हमारी पूर्व–निर्धारित अवधारणाएं थीं और वे शिक्षण के परंपरागत तरीकों तक ही सीमित थी। मात्र साफ और स्वच्छ इमारत, चार्टों से सजी कक्षा, अनुशासित विद्यार्थी और अच्छे परीक्षा–परिणाम हमें पर्याप्त लग रहे थे। लेकिन, जब एनसीईआरटी से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाली दो शिक्षिकाओ ने इस शिक्षण–शास्त्र को लागू करना शुरू किया, तो विद्यालय के संपूर्ण वातावरण में बदलाव आने लगा। इसका प्रभाव विद्यार्थियों के व्यवहार, शिक्षकों के व्यवहार और शिक्षक–विद्यार्थी संबंधों में भी दिखाई दिया। यह देखा गया कि 'कला समेकित अधिगम' आधारित कक्षाओ में भाग लेने वाले बच्चे अधिक आत्मविश्वासी और जिम्मेदार बन गए थे। उन्होंने पहले से अधिक बातचीत करना और दूसरों की सहायता करना प्रारंभ कर दिया था। अन्य शिक्षकों ने भी बहुत जल्द ही इसे अपनी कक्षाओ में लागू करना शुरू कर दिया। इन कक्षाओं से हमेशा ताली बजाने, गाने आदि की आवाजें आया करती थी जो विद्यार्थियों को सीखने की प्रक्रिया की ओर आकर्षित करती थीं। बच्चों का स्वतंत्रता स्तर कुल मिलाकर बेहतर हो गया था जोनल और अतंर–जोनल स्तर की प्रतियोगिताओं में उनकी भागीदारी उल्लेखनीय रूप से बढ़ गई और छात्रवृत्तियों की संख्या भी बढ़ गई थी।

धीरे–धीरे इसने हमें यह विश्वास दिलाया कि बच्चों को अपने विचारों और सोच को व्यक्त करने की स्वतंत्रता देने से सीखने के प्रति उनकी रुचि बढ़ सकती है। 'कला समेकित अधिगम' खोजबीन करने, प्रयोग करने और अभिव्यक्ति के लिए पर्याप्त अवसर बच्चों को प्रदान करता है।

यह उन्हें अपने कौशलों में उत्कृष्टता प्राप्त करने में मदद करता है। अब मेरा यह मानना है कि कोई बच्चा यदि पहली पीढ़ी का शिक्षार्थी है, समाज के कमजोर वर्गों से संबंधित है या शारीरिक रूप से अक्षम है ये कारण उसकी क्षमताओं का निर्धारण या उन्हें सीमित नहीं कर सकते। उचित वातावरण और मार्गदर्शन दिए जाने पर वह बच्चा भी प्रतिभा और सृजनात्मकता में किसी से कम नहीं है। विद्यालय के परिवेश को यह समावेशन 'कला समेकित अधिगम' प्रदान करता है, जिसके माध्यम से विद्यार्थी समग्र विकास का एक हिस्सा बन पाते हैं।

शिक्षक होना एक गंभीर जिम्मेदारी है जिसके लिए उच्च गुणवत्ता वाले संसाधनों की आवश्यकता होती है। योग्य, समर्पित और पेशेवर शिक्षा क्षेत्र में शिक्षकों की तत्काल मांग है। **(बर्न्स 2004)** किंडरगार्टन शिक्षक अपनी शिक्षण गतिविधियों के दौरान भूमिकाएँ निभाते हैं, जिसमें बातचीत करना, पालन–पोषण करना, दबावों का प्रबंधन करना, सुविधा प्रदान करना, योजना बनाना,

समृद्ध करना, समस्या–समाधान करना, सीखना और मार्गदर्शन करना और रखरखाव। **(सुजियोनो 2009)** 'कला समेकित शिक्षा' अनुभवात्मक और आनंदपूर्ण अधिगम का शिक्षण–शास्त्र है।

इसके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए विद्यालय के शिक्षक विद्यालय–प्रमुख सहित सभी शैक्षिक प्रशासकों को इसकी प्रासंगिकता के बारे में जागरूक करना अत्यंत आवश्यक है। इन सभी को अनुकूल वातावरण बनाने में सहायता करनी चाहिए ताकि सही अर्थों में 'कला समेकित अधिगम' का कार्यान्वयन किया जा सके। इसलिए यह प्रयोग यह देखने के लिए किया जा रहा है कि शिक्षक कला समेकित शिक्षा को अपनाने में सक्षम हैं या नहीं।

शिक्षण प्रदर्शन एक महत्वपूर्ण पहलू है जिस पर विचार किया जाना चाहिए। **(व्हाइटबुक 2014)** क्योंकि यह प्रभावित करता है सीखने की प्रभावशीलता और गुणवत्ता, छात्रों की प्रेरणा, दृष्टिकोण, व्यवहार और विकास को प्रोत्साहित करता है। अच्छी तरह से प्रशिक्षित शिक्षक छात्रों की विशेषताओं को पहचानकर सीखने की प्रक्रिया में छात्रों का प्रभावी ढंग से मार्गदर्शन करते हैं। **(फजाने 2014)**

साहित्य की समीक्षा

करेन डीमॉस, टेरी मॉरिस(2002)

करेन ने शोध किया जिसमें कला समेकित अधिगम और गैर कला समेकित अधिगम से पढ़ने वाले शिक्षार्थियों पर अनुसंधान किया जिससे यह निष्कर्ष निकला कि :–

1) शिक्षार्थियों को सीखने में स्वतंत्रता मिली और आंतरिक रूप से प्रेरित हुए,
2) शिक्षार्थियों को याद करने के बजाय समझने में बढ़ावा मिला,
3) जो तथ्य सीखने में रुकावट आ रही थी उसे चुनौतियों में बदल दिया,
4) छात्रों को कक्षा के बाहर सीखने के अवसरों को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया।

हार्वे (1989) प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों पर किए गए अपने शोध में हार्वे ने पाया कि कला प्रक्रिया बोध, उपलब्धि, अभिप्रेरणा और आत्म–अवधारणा से जुड़ी होती है। संक्षेप में, जब कला और सीखने की प्रक्रिया का समेकन किया जाता है, तब यह शिक्षा के भावात्मक पक्ष को भी मजबूत करती है।

डोना सेंट जॉर्ज, (2015) वाशिंगटन के एक प्राथमिक विद्यालय में एक अध्ययन किया गया। अध्ययन द्वारा यह पाया गया कि यदि शैक्षणिक कक्षाओं में कला समेकित शिक्षा का उपयोग रचनात्मक द्वारा किया गया तो इससे गणित और अग्रेंजी की परीक्षाओं में प्राप्त अकों में सुधार हुआ।

बेनेगल (2010) द्वारा उल्लेख किया गया कि कला मस्तिष्क में नाटकीय बदलाव लाती है, जैसे कि 'ध्यान देने के तंत्र' को मजबूत करना। मस्तिष्क के वे क्षेत्र जो संगीत में सम्मिलित होते हैं, वे भाषा, श्रवण धारणा, ध्यान, स्मृति और मोटर नियंत्रण की प्रक्रियाओं में भी सक्रिय होते हैं। आज के ज्ञान आधारित संसार में संतुलित मानसिक विकास को बढ़ावा दने के लिए कला शिक्षा की बहुत आवश्यकता है।

परी और अरोड़ा (2013) ने नई दिल्ली में नगर निगम विद्यालयों की 107 कक्षाओं में 'कला समेकित अधिगम' के उपयोग की समीक्षा की और पाया कि– (i) स्कूल के वातावरण में उल्लेखनीय बदलाव हुआ (ii) सीखने की प्रक्रिया में विद्यार्थियों की भागीदारी का स्तर बढ़ा (iii) विद्यार्थियों की उपस्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ (iv) शैक्षिक उपलब्धियों में सुधार हुआ और (v) जिन कक्षाओं में 'कला समेकित अधिगम' का उपयोग नहीं किया जा रहा था, उन कक्षाओं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की तुलना में इन विद्यार्थियों में नई स्थितियों को संभालने के लिए अधिक आत्मविश्वास और खुलापन पाया गया।

ज़फर और असलिहान (2012) ने पाया कि अधिक वर्षो के शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों ने कक्षा प्रबन्धन के प्रति काफी अलग दृष्टिकोण दिखाया जैसे वे अपनी कक्षाओं पर अधिक नियन्त्रण रखते हैं, छात्रों के साथ अच्छी बात–चीत करते हैं और कम वर्षो के शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों की तुलना में निर्णय लेने मे बेहतर होते हैं। इससे पता चलता है कि शिक्षक की शिक्षण पद्धति में अनुभव और उम्र काफी महत्वपूर्ण हैं।

महफूज उल हक और मुमताज अख्तर (2013) अध्ययनों मे पाया कि वर्षो से पढा रहे शिक्षकों के अनुभव और शिक्षण रणनीतियों को शामिल करने में शिक्षक की प्रभावशीलता को प्रभावित कर सकता हैं क्योकि कई वर्षो की सेवा और थकान के कारण वे कम प्रेरित हो सकते हैं।

रहीदा ऐनी मोहम्मद इस्माइल, आर अरशद, ज़कारिया अबास (2018) इस अध्ययन मे परिकल्पना तैयार की गई और उसका परीक्षण किया गया।नमूना आकार में 410 शिक्षक शामिल थे। डेटा का विश्लेषण अनुमानात्मक ऑकड़ों का उपयोग करके किया गया, सांख्यिकीय साक्ष्य के आधार पर पता चला कि उम्र, अनुभव और शिक्षक प्रभावशीलता के बीच महत्वपूर्ण अन्तर है।

कार्यप्रणाली

कार्यप्रणाली एक ऐसी प्रक्रिया है जो अनुसंधान कार्य के दौरान शोधकर्ता द्वारा अपनाई गई सभी विधियों और तकनीकों की समीक्षा करती है । किसी भी शोध कार्य की सफलता काफी हद तक तरीकों की उपयुक्तता पर निर्भर करती है, डेटा एकत्र करने और संशोधित करने में संसाधनों द्वारा अपनाए जाने वाले उपकरण और तकनीक, कार्यप्रणाली की भूमिका एक विशिष्ट और वैध तरीके से शोध कार्य को आगे बढ़ाने की है।

परिकल्पना

1. 21–40 वय वर्ग के शिक्षक और 50–60 वय वर्ग के शिक्षक की शिक्षण पद्धति में अंतर होगा।
2. 21–40 वय वर्ग के शिक्षक कला समेकित शिक्षा का अनुकूल तरीके से प्रयोग कर पा रहे हैं।

चर

वर्तमान अध्ययन में दो प्रकार के चर हैं, स्वतंत्र चर और आश्रित चर शामिल हैं ।

स्वतंत्र चर – आयु में अंतर

आश्रित चर – शिक्षण के परिणाम

नमूना

नमूने का चयन सुविधाजनक नमूनाकरण तकनीकों का उपयोग करके किया गया है, नमूने में सौ प्रतिभागी शामिल है।

प्रश्नावली

इस स्केल में 20 प्रश्न है जिसको पूरा करने में 5 से 7 मिनट का समय लगता है, इस पैमाने के लिए स्कोर 3 बिंदु प्रतिक्रिया प्रारूप पर प्राप्त प्रत्येक प्रश्न पर प्रतिक्रियाओं से प्राप्त होते हैं (हां, थोड़ा बहुत, नहीं)।

हाँ	3
थोड़ा बहुत	2
नहीं	1

परिणाम

तालिका 1

आयु में अंतर	संख्या
50–60 वय वर्ग के शिक्षक	50
21–40 वय वर्ग के शिक्षक	50

तालिका 2–

नमूने के 50–60 वय वर्ग के शिक्षक और 21–40 वय वर्ग के शिक्षक के बीच टी–परीक्षण दिखा रहा है–

समूह	50–60 वय वर्ग के शिक्षक	21–40 वय वर्ग के शिक्षक
माध्य	34.24	52.25
मानक विचलन	3.49	3.49

तालिका 2 स्पष्ट रूप से दोनों समूहों के माध्य में अंतर को दर्शाती है (21–40) वय वर्ग वाले शिक्षक का औसत 52.28 निकला जबकि 50–60 वय वर्ग वाले शिक्षक का औसत 34.24 और टी–मान 21.75 है जो कि 0.05 और 0.01 पर सार्थक है। सीखने के परिणाम पर प्रत्येक अंतर के प्रभाव की पहचान करने के लिए उम्र के अंतर के संदर्भ में दो समूहों के बीच स्पष्ट विसंगति का सुझाव देते हुए स्वतंत्र चर और आश्रित चर के बीच अंतर का पता लगाने के लिए टी परीक्षण की गणना की गई थी।

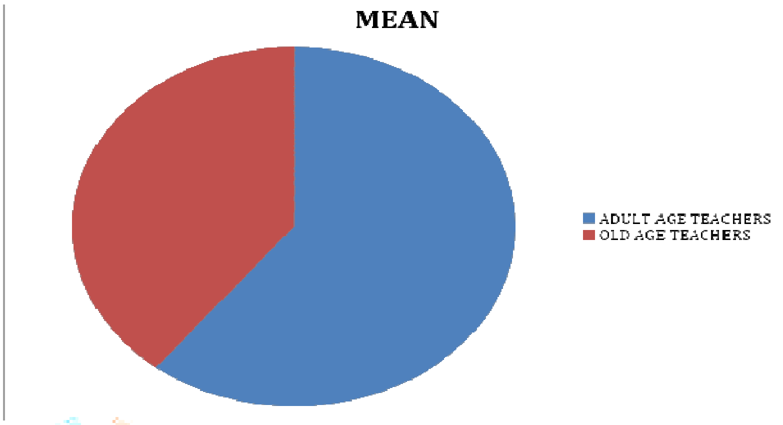

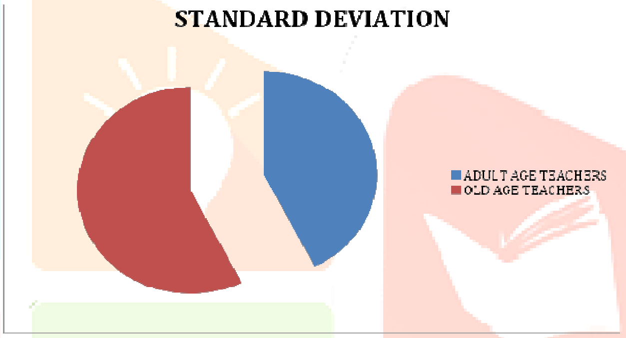

निष्कर्ष

वर्तमान अध्ययन ने शिक्षकों के शिक्षण अनुभवों और आयु समूहों के बीच महत्वपूर्ण अंतर होने की पुष्टि की है, परिणाम की जांच परिकल्पना के आधार पर की गई परिणाम से पता चलता है कि परिकल्पना सिद्ध हो गई है 50–60 वय वर्ग के शिक्षक और 21–40 वय वर्ग के शिक्षक के बीच अधिक महत्वपूर्ण अंतर है, रहीदा ऐनी मोहम्मद इस्माइल, आर अरशद, ज़कारिया अबास 2018 के भी शोध में पाया गया कि उम्र, अनुभव और शिक्षक प्रभावशीलता के बीच महत्वपूर्ण अंतर है। यह भी देखा गया कि 21–40 वय वर्ग के शिक्षक कला समेकित शिक्षा का प्रयोग अच्छी तरीके से कर पा रहे हैं इसका कारण यह है कि युवा शिक्षकों में सबसे अधिक ऊर्जा और उत्साह है। वे उम्र में छात्रों के करीब हैं और प्रौद्योगिकी और वर्तमान स्थानीय भाषा से अधिक परिचित हैं, युवा शिक्षकों के पास नए विचार होते हैं, युवा शिक्षक शिक्षण के बारे में और अधिक जानने के लिए अधिक उत्सुक हैं, युवा शिक्षक परिवर्तनों के प्रति अधिक लचीले होते हैं, और यह भी कारण है कि 50–60 वय वर्ग के शिक्षक परम्परागत शिक्षण करते आये है और उसी में ढल गये है, समेकित शिक्षण में नये प्रयोग किये जाते हैं जिसमे वह असमर्थ महसूस करते है, समय के साथ शिक्षण के बदलते परिवेश में वह अपने आप को नहीं जोड पा रहे है, पुराने शिक्षक चॉकबोर्ड और वर्कशीट जैसे पुराने तरीकों को पसंद करते हैं, इसलिए 50–60 वय वर्ग के शिक्षकों को ज्यादा परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

सुझाव

1. शिक्षकों को अपने शिक्षण कौशल में वृद्धि करने का प्रयास करना चाहिए।
2. कला समेकित शिक्षण कर रहे शिक्षकों के उदाहरण प्रस्तुत कर उन्हें पुरस्कृत करना चाहिए।
3. राज्य व जनपद स्तर के प्रशिक्षण में ऐसे शिक्षकों पर विशेष ध्यान देने कि आवश्यकता है।
4. समय–समय पर शिक्षकों की मॉनिटरिंग कर सहयोगात्मक पर्यवेक्षण आवश्यक है।

IJCRT

सदर्भ

1. खान, मोहम्म्द मुजफ्फर अली, शेख लियाकत, द इपोर्टेन्स ऑफ फाइन आर्टस एडुकेशन एन ओवरविव्यू जरनल,जरनल ऑफ रिसर्च इन ह्यूमनिटीज एण्ड सोशल साइंस वॉल्यूम –4 इश्यू 10, 2016
2. द सिओल एजेंडारू गोल्स फॉर द डेव्लपमटें ऑफ आर्ट्स एडुकेशन, द सेकेण्ड वर्ल्ड कोंफेरेंस ऑन आर्ट एडुकेशन सिओल 2010
3. पोजीशन पेपर ऑन आर्ट्स, म्यूजिक,डांस एड थिएटर, एनसीईआरटी 2006
4. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा एनसीईआरटी, 2005
5. ट्रेनिग पैकेज फॉर आर्ट इंटीग्रेटेड फॉर प्राइमरी टीचर एनसीईआरटी 2015
6. सेंट जॉर्ज, डोना. सेंट मोर स्कूल्स आर वर्किंग टु इंटीग्रेटेड आर्टस इन क्लास रूम' वाशिगंटन पोस्ट.दिसंबर 2015
7. नोबोरी मारिकों 'हाऊ द आर्ट्स अनलॉक द डोर टु लर्निंगय एडुटोपिया जॉर्ज लकस फाउंडेशन फॉर एडुकेशन अगस्त 2012
8. रिपोर्ट ऑन नेशनल सेमिनार ऑन आर्ट इट् रीगेटेड लर्निंग, डीईएए, एनसीईआरटी 2012
9. प्रसाद, देवी. आर्ट द बेसिस ऑफ एडुकेशन, नेशनल बुक ट्रस्ट, 1998
10. जे.एम. स्मिता, एक्टिव लर्निंग एज एन इफ्फेक्टिव टूल टु एनहन्ेस कोग्नीशन, जरनल ऑफ इण्डिया एडुकेशन नवंबर 2017. पष्ठ. 155–166
11. रेइस, रिकर्डो. 'पब्लिक आर्ट एज एन एडुकेशन रिसोसर्रू इन्टरनेशनल जनरल ऑफ एडुकेशन थ्रो आर्ट, वॉल्यूम . 6, 2010. पष्ठ. 85–96
12. डनकम, पी. 'अ केस फॉर एन एडूकेशन ऑफ एवेरी डे एस्थेटिक एक्सपेरिएन्स' स्टूडेंटइन आर्ट एडुकेशन वॉल्यूम 40,1999. पष्ठ. 295–311
13. स्पीलाने, जेम्स पी. मेगन होपकिंस, एडटेरेसी एम. स्वीट. ''इट्रंा– एड इंटर स्कूल इंटरेक्शन अबाउट इस्ट्रं कशनरू एक्सप्लोरिंग द कंडीशन फॉर सोशियल केपिटल डेव्लपमटें'' अमेरिकन जनरल ऑफ एडुकेशन, नंबर. 1, 2015. पष्ठ. 71–110.
14. ब्रौईल्लेत्ते, लिएन. हाऊ द आर्ट्स हल्ेप चिल्डेरेन टु क्रिएट हल्ेथी सोशियल स्क्रिप्ट्स रू एक्सप्लोरिंग द परशपशन ऑफ एलिमेंट्रीटीचर्स, आर्ट एडुकेशन पॉलिसी 111, 1, 2009. पष्ठ 16–24